प्राचार्य की कलम से....................

आर्य समाज के तपः सपूत आर्य सन्यासी इन्द्रवेश जी की सत्प्रेरणा एवं आप सभी (क्षेत्रीय नागरिकों) के सहयोग से परमश्रद्धेय स्वतंत्रता सेनानी चौधरी बलाराम आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 09 फरवरी 1986 को चान्दगोठी की इस पवित्र भूमि पर जिस शिशुरूपी पौधे (विद्यालय) को रोपित किया गया था वह आज स्नातक कक्षा के विकास–पथ पर अग्रसर होता हुआ किशोरवय स्नातकोत्तर व शिक्षक प्रशिक्षण स्तर को प्राप्त कर रहा है । अभी मैं 'युवा स्वरूप' नहीं प्रदान कर सकता क्योंकि युवा स्वरूप वह है जिसे "ओर आगे पहुँचाना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं" को कहा जाता है । इस संस्था को आज सभी लोगों के सहयोग से अभी और भी उचाइयॉ प्राप्त करनी है ।

इस महाविद्यालय में स्नातक कक्षाओं में हिन्दी साहित्य, संस्कृत साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, राजनीति विज्ञान, इतिहास, भूगोल, समाज, अर्थशास्त्र, गृह विज्ञान, लोक प्रशासन, कम्प्युटर विज्ञान, चित्रकला, आदि विषयों में शिक्षा प्रदान की जा रही है । इनके साथ ही स्नातकोत्तर कक्षाओं में भूगोल, व इतिहास विषयों का अध्यापन करवाया जा रहा है । विज्ञान संकाय में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा गणित विषयों का अध्यापन करवाया जा रहा है । सत्र 2018–19 में B.A.B.ED./B.SC.B.ED. का चार वर्षीय कोर्स पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है इस गुरूकुल पद्धति पर आधारित महाविद्यालय प्रांगण में स्वाध्याय, योग साधना, हवन एवं आध्यात्मिक ज्ञान के साथ ही छात्र/छात्राओं को उच्च शिक्षा के विकास की ओर उन्मुख किया जा रहा है ।

"सुयोग्य, कर्मठ एवं उच्च शिक्षित प्राध्यापकों की सेवाऐं संस्था का गौरव बढाती है" इस महाविद्यालय में ऐसे सुयोग्य प्राध्यापकों द्वारा शिक्षा प्रदान की जा रही है ।

छात्र/छात्राओं के लिए समय–समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद प्रतियोगिता, खेल–कुद तथा उनके भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं पौराणिक ज्ञान वृद्धि हेतु वार्षिक भ्रमण की व्यवस्था की गयी है । यह सब कुछ आप सभी क्षेत्रिय नागरिकों एवं अभिभावकों के सहयोग एवं सुझाव का प्रतिफल हैं हमें विश्वास है कि आने वाले समय में ऐसे छात्र/छात्राऐं उत्पन्न होगें जो इस महाविद्यालय के ही नहीं अपितु इस क्षेत्र के गौरव बनेंगे ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी लोग इस संस्था के विकास हेतु अपना सहयोग एवं सुझाव प्रदान करते रहेंगे ।

प्राचार्य

डॉ. विमल कुमार शुक्ला